Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JAN-FEB, 2022, VOL- 9/69
doi.org/10.21922/srjis.v9i69.10064

राष्ट्रभाषा हिंदी के विविध रूप

सौ. सरिता मनोहरराव डोंगरे
सहशिक्षिका सौ. मंजुळाबाई हायस्कूल खतगाव.

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

भाषा अपने मूल रूम में ध्वनियों पर आधारित है। सार्थक ध्वनियो का मेल ही भाषा है। हमारे भारत देश में करोडो भाषाएँ बोली जाती है। लेकीन हिंदी भाषा को हि राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा का सम्मान मिला है।

हिंदी आज अनेक क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है। इस कारण हिंदी के अनेक रूप दिखाई देते हैं। हिंदी के उल्लेखनीय विविध रूप इस प्रकार है।

संपर्क भाषा हिंदी

संपर्क भाषा उसे कहा जाता है जिसे राष्ट्र के एक कोने से, दूसरे कोने समझते हैं, जिसके माध्यम से राष्ट्र के किसी भी कोने में जनता संपर्क कर उसे ही संपर्क भाषा कहा जाता है। हिन्दी इस दृष्टि से अत्यंत प्राचीन जनभाषा के रूप में दिखाई देती है।

(1) आदिकाल में हिन्दी: डिंगल - पिंगल अपभ्रंश: संपर्क भाषा रूप में आदिकाल में हिन्दी का विकास डिंगल और पिंगल के रूप में दिखाई देता है। हिंदीने अपने पूर्व रूप डिंगल और पिंगल के आधार पर विचार विनिमय किया । आदिकाल के अनेक कवियों ने भी हिन्दी के इस पूर्वरूप को संपर्क के रूप में अपनाया हिंदी के शुरू-शुरू के कवि अमीर खुसरों आदि ने भी इसी प्राचीन हिन्दी का प्रयोग संपर्क भाषा में किया। उनकी पंक्तीयां इसका उदाहरण है

रासो ग्रंथों के साथ ही साथ अन्य अनेक अपभ्रंश ग्रंथों के रूप भाषा के रूप में हिन्दी के इस पूर्व रूप का उपयोग दिखाई देता है ।

(2) मध्यकाल : अवधी / अन मध्यकाल में ब्रज और अवधी से संपर्क रूप में दिखाई देती है। ब्रज और अवधी के साथ ही साथ मध्यकाल के भाषा के मध्यकाल में ब्रजभाषा ही दिखाई देती है। शिवाजी के समकालीन कवि भाषा के अनेक पदों का जो निर्माण किया, वह तात्कालीन संपर्क भाषा हिन्दी ही है

(3) आधुनिक काल : खड़ी बोली आधुनिक काल में खड़ी बोली हि संपर्क भाषा दिखाई देती है। गद्य और पद्य में समान रूप से इसका प्रयोग दिखाई देता है अनेक नेताओं ने स्वाधीनता का आंदोलन चलाया। इसके कारण अखिल भारतीय स्तर पर इसके विविध रूप दिखाई देते हैं। इसी कारण ही हिन्दी राजभाषासी बन गयी राष्ट्रभाषा के रूप में उसका विकास हुआ, समाचार के माध्यमों, फिल्मों, दूरदर्शन और विविध कार्यक्रमों के आधार पर संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी इतनी विकसित हो गयी कि केवल राष्ट्र तक सीमित नहीं रही आज आधुनिक काल में विदेशो में

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। अनेक राष्ट्रों में यह भाषा बोली जाने के कारण ही हिन्दी का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप बढ़ता जा रहा है। हिन्दी आज अनेक क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है। भारत में किसी भी कोने में हिन्दी प्रयुक्त है। इतना ही नहीं उसका सहज प्रयोग किया जाता है। पाश्चात्य देशों में भी उनकी भाषाओं के साथ ही साथ हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है ।

वैश्वीकरण के कारण हिन्दी आज अनेक देशा में प्रयुक्त होती है। इसलिए यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी का संपर्क भाषा के रूप में विकास बहुत अधिक बढ़ता हुआ दिखाई देता है।

(2) राष्ट्रभाषा हिन्दी

राष्ट्रभाषा राष्ट्र की अस्मिता मानी जाती है | राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का रूप बहुत अधिक विकसित दिखाई देता है। भारत में अनेक भाषाएँ हैं, लेकिन इन भाषाओं का प्रतिनिधित्व करने का काम हिन्दी ही करती है। विविध जातियों, धर्मों के लोग इस देश में रहते हैं। उनमें एकता निर्माण करने का कार्य हिन्दी के आधार पर किया जाता है। भारत में आर्य-अनार्य भाषाओं के आधार पर राष्ट्रभाषा का विकास हुआ हमें दिखाई देता है। लेकिन राष्ट्रभाषा के प्रति जैसी अस्मिता होनी चाहिए थी, उसका अभाव भारत में दिखाई देता है। यही कारण है कि राष्ट्रभाषा की गतिशीलता, तीव्रता भारत में नहीं है। इसके अनेक कारण है। यह भी कहा जाता है कि राष्ट्रभाषा की उपेक्षा राष्ट्रद्रोह माना जाता है। लेकिन भारत में राष्ट्रभाषा का जैसा रूप दिखाई देना चाहिए था वैसा दिखाई नहीं देता ।

भाषा की गतिशील घेतना का प्रतीक होता है, सांस्कृतिक ऊर्जा का प्रतीक होती है। राष्ट्र में भावनात्मक एकता निर्माण करने का कार्य राष्ट्रभाषा करती है। किसी भी देश में राष्ट्रभाषा का महत्व सबसे अधिक होता है ।

भारत में स्वाधीनता के पूर्व ही हिन्दी ने राष्ट्रीय एकता निर्माण करने में अपनी भूमिका अदा की। स्वाधीनता के पूर्व ही हिन्दी में लोगों ने वैचारिकता जागरूक करते हुए स्वाधीनता आंदोलन को आसान बनाया देश के सभी नेताओं ने हिन्दी में ही अपने विचारों को प्रकट कर राष्ट्रभाषा को समृद्ध भी किया |

राष्ट्रभाषा राष्ट्र में एकता निर्माण करने के साथ ही साथ राष्ट्र की संस्कृति संरक्षित करती है। भारत में दिखाई देने वाली विविधता हिन्दी के आधार पर ही विदेशी लोगों को दिखाई देती है। इसी कारण ही संविधान में हिन्दी राजभाषा घोषित की है|

हिन्दी ने राष्ट्रभाषा के रूप में प्रगति तो की है लेकिन हम देखते हैं कि चीन में चीनी का या जापान में जापानी का जो महत्व है वह भारत में हिन्दी का नहीं दिखाई देता | इसका कारण यह है कि राष्ट्रभाषा की और हमारा देखने का दृष्टिकोण जो निःस्वार्थ होना चाहिए वह दिखाई नहीं देता। दूसरी बात यह है कि भारत में भाषा की राजनीति खेली जाती है और परिणाम यह हो जाता है कि इस देश में भाषा के रूप आधार पर दंगे भी हो जाते हैं। इसी कारण संविधान में राजभाषा के रूप में तो है लेकिन व्यवहार में हम अंग्रेजी का ही प्रभाव देखते हैं। इसी मानसिकता के कारण जैसी प्रगति भारत की हो जाती थी, वैसी दिखाई नहीं देती। इसके साथ हि साथ राष्ट्रभाषा के आधार पर एक प्रकार की शक्ति भारत को महसूस करने चाहिए थी, वैसी शक्ति भारत में दिखाई नहीं देती । स्पष्ट है राजनीतिक विवाद के राष्ट्रभाषा की प्रगति जैसी भारत में होनी चाहिए थी वैसी नहीं हुई। विदेशी न अंग्रेजी का ही आज अनेक क्षेत्र में प्रभाव दिखाई देता है। इसी प्रभाव के कारण ही हम अभी भी मानसिक गुलामी में (तनाव में) दिखाई देते हैं

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

। इसलिए राष्ट्रप्रेमी लोगो को इस संबन्ध में चिंत्तन करना चाहिए और विविध प्रयास कर राष्ट्रभाषा हिन्दी को जो सम्मान देना चाहिए वह प्राप्त कर देना चाहिए|

(3) राजभाषा हिन्दी

हिन्दी के विकास के अंतर्गत राजभाषा हिन्दी का रूप भी दिखाई देता है राजभाषा अर्थात् कार्यालय में प्रयुक्त हिन्दी है । संविधान में इस आधार पर हिन्दी की स्वीकृति दी है| स्वाधीन भारत में इस आधार पर राजभाषा हिन्दी की प्रगति करने के संदर्भ में विविध प्रयास किए हैं। सन् 1969 के बाद राजभाषा के रूप में हिन्दी अनिवार्य रूप से राजभाषा हो जायेगी ऐसा लग रहा था लेकिन ऐसा नहीं हुआ लेकीन इतना होने के बावजूद भी राजभाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति बहुत अधिक दिखाई देती है। हिन्दी सभी क्षेत्रों में प्रयुक्त होती है। इतना ही नहीं अनेक आयोगो के आधार पर राजभाषा को समृद्ध करने की कोशिश की जा रही है। हिन्दी आज सभी क्षेत्रों में प्रयुक्त होने के कारण राजभाषा के रूप में इसकी विकास की गति भी बहुत अधिक दिखाई देती है। ऐसा कोई भी क्षेत्र नहीं जहाँ राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग नहीं होता|

लेकिन इतना सबकुछ होने पर भी राजभाषा के रूप में हिन्दी का विकास जितना वैश्वीकरण के इस युग में हिन्दी होना आवश्यक था उतना नहीं हुआ और अधिक सशक्त बनाना आवश्यक है और ये सशक्त बनाने का कार्य भारतीय लोगों तथा अन्य भाषाओं को करना पड़ेगा तभी हिन्दी वैश्विक स्तर पर अधिक प्रभाव दिखा सकता है|

(4) माध्यम भाषा हिन्दी

भाषा विचारों का आदान प्रदान करने का साधन मोना जाता है । इसी साधन के अन्तर्गत ही अनेक भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। हिन्दी में विविध विषयो की जानकारी ग्रहण कर अनेक विषयों की अभिव्यक्ति की है। इस आधार पर आज हिन्दी ज्ञान विज्ञान की एक सशक्त भाषा मानी जाती है। इसी सशक्तता के कारन ही आज माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी का बहुत अधिक विकास दिखाई देता है।

जब हम भारत को देखते हैं तो यह दिखाई देता है कि भारत में दर्शन और अध्यात्म की भाषा संस्कृत रही है। आधुनिक काल में अध्यात्म की भाषा संस्कृत रही है । आधुनिक काल में अंग्रेजी के साथ ही माध्यम भाषा के रूप में अंग्रेजी भाषा रही है। लेकिन बाद में हम यह देखते हैं कि भारत में जितने भी अधिक विषय हो सकते हैं उनकी अभिजाति के लिए हिन्दी माध्यम भाषा रहीं ।

आज हिन्दी में इतिहास, दर्शन, रसायन, भौतिकी, अर्थशास्त्र, राजनीति, शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान आदि विषयों की अनेक पुस्तके उपलब्ध है। विश्वविद्यालयों में भी हिन्दी माध्यम से अध्ययन तथा अध्यापन दिखाई देता है। विदेशों में अनेक प्रकाशित पुस्तकें हिन्दी में अनुवादित दिखाई देती है। इस कारण माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी का बहुत अधिक विकास दिखाई देता है। आज ऐसा कोई विषय नहीं है जो हिन्दी के आधार पर प्रकट नहीं किया जा सकता। इस कारण हिन्दी अनेक रूपों में दिखाई देती है|

शिक्षा और तकनिकी को भी आज हिन्दी माध्यम में हम देखते हैं। इस प्रकार शिष्य और विज्ञान की जो भी बाते हैं उन बातों को प्रकट करने के लिए माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी प्रयोग किया जाता है

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लोक सेवा आयोग, उच्चालय, न्यायालय, अखिल भारतीय सैन्य परिक्षाएं आदि का माध्यम भी आज हिन्दी है। हिन्दी को माध्यम बनाने के कारण ही यह रोजगार परख बन गयी है। इसके कारण अनेक क्षेत्रों की जानकारी की माध्यम भाषा के रूप में हिन्दी का विकास दिखाई देता है

(5) संचार भाषा हिन्दी

मानव के विकास के साथ ही साथ उसकी संवाद प्रक्रिया भी विकसित होती है। संवाद प्रक्रिया में दिन ब दिन परिवर्तन देखने को मिलता है। संचार माध्यमों में भी बहुत अधिक परिवर्तन देखने के लिए मिलता है। शुरू में संचार के माध्यम बहुत कम थे लेकिन आज संचार के माध्यम बहुत अधिक दिखाई देते हैं। इन्हीं संचारों के लिए आजकल हिन्दी का भी प्रयोग किया जाता है। इस कारण हिन्दी आज संचार भाषा की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण भाषा मानी जाती है। मुद्रण के साथ ही साथ सेक्युलर, फिल्म, दूरदर्शन आदि सभी क्षेत्रों में संचार भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। इस कारण हिन्दी आज केवल बोलचाल की या ज्ञान विज्ञान की ही भाषा नहीं रही बल्कि, अनेक तकनिकी रूपों की भाषा हुई है | संचार माध्यमों में हिन्दी के प्रयोग के कारण हिन्दी का संचारगत रूप विकसित दिखाई देता है ।

सारांश

इस प्रकार राष्ट्र भाषा हिंदी का रूप आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक तथा उसमें आए नए-नए परिवर्तन एवं विकास की गतिशिलता को देखा जा सकता है। इसे राष्ट्रभाषा का भी सम्मान मिला है। यह भाषा समूचे देश को एक सूत्र में बांधने का काम करती है। यह हिंदी भाषा सन्चार की भाषा सहज, सरल एवं सुबोध तथा मनोहारी भाषा है इसलिए इसके विविध रूप हमें दिखाई देते हैं।

संदर्भ

देवेन्द्रनाथ शर्मा : राष्ट्रभाषा हिन्दी समस्या ओर समाधान, लोकभारती प्रकाशन वर्ष २००७
सुरभी दत्त :- हिन्दी राष्ट्रभाषा से विश्वभाषा , विकास प्रकाशन कानपूर - २०१९
राहुल संक्रत्यायन – राष्ट्रभाषा हिन्दी , राजकुमार प्रकाशन
डॉ. सेठ गोविंद दास – राज भाषा हिन्दी, हिन्दी साहित्य संमेलन अलाहाबाद १९६५
डॉ. विमल शर्मा – हिन्दी भाषा एवं साहित्य.

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies